विस्तार पत्रक भा.कृ.अनु.प./रा.उ.अ.के/2018/03

ऊँटों को चिन्हित करने के पारंपरिक एवं नूतन तरीके

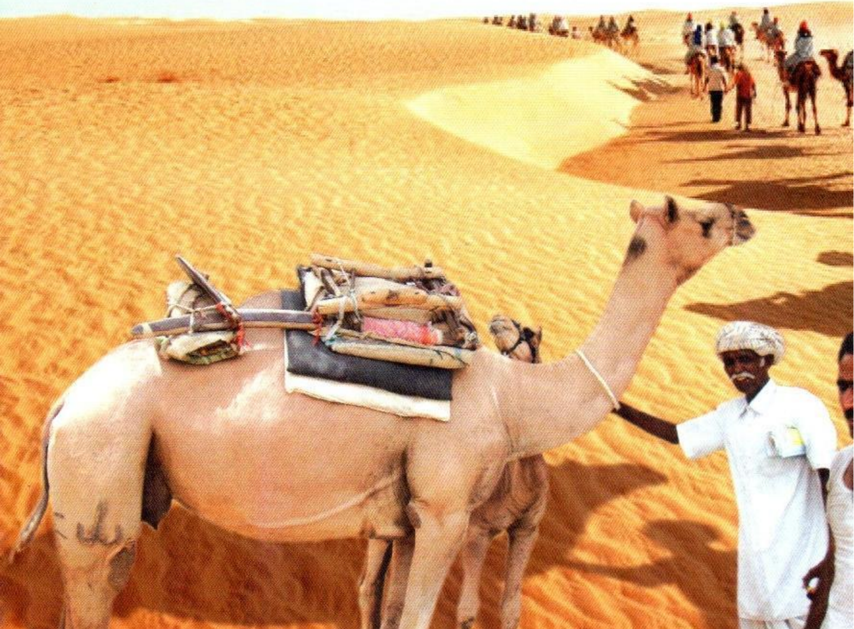

लेखक गण

राजेश कुमार सावल, राकेश रंजन
नेमीचंद बारासा, अविनाश कुमार शर्मा

भाकृअनुप
ICAR

भा.कृ.अनु.प.-राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसन्धान केन्द्र
पोस्ट बैग 07, जोड़बीड़
बीकानेर, राजस्थान

ऊँटों को चिन्हित करना

इस चराचर जगत में सबसे विवेकशील प्राणी मनुष्य आदि काल से ही जीवन यापन हेतु जानवरों पर अपना स्वामित्व स्थापित कर उन्हें पालने का कार्य करता आ रहा है। मनुष्य द्वारा अपने पशु की पहचान हेतु उन पर पहचान चिह्न लगाना पशु के स्वामित्व का पहला स्पष्ट प्रमाण माना जाता रहा है। इस परिप्रेक्ष्य में ऊँटों को चिन्हित किया जाना विशेष महत्व रखता है। प्राचीन काल से ही ऊँट पालक अपने ऊँट को दूसरों से अलग दिखाने के लिए उस पर पहचान चिह्न लगाने के साथ–साथ उसे नाना प्रकार से शृंगारित भी करता है। इस शृंगार में पशु व स्वामी के बीच अपनत्व का रिश्ता भी छिपा होता है।

पारंपरिक तौर पर ऊँटों को चिन्हित करने हेतु गर्म छाप **(हॉट ब्रांडिंग)** का इस्तेमाल किया जाता है। इसके लिए विभिन्न आकृति के लोहे को आग में खूब तपाकर शरीर के अलग–अलग भागों के ऊपर सटाकर रखा जाता है। इससे ऊपर की चमड़ी जल जाती है और अन्दर का जब जख्म भरता है तो उस स्थान पर वह चिन्ह दूर से ही स्पष्ट नजर आने लगता है। ऐसे चिन्हों को लगाने के स्थान का चयन दो बातों को ध्यान में रखकर किया जाता है। पहला, ऐसे निशान दूर से ही पहचाने जा सके और दूसरा, इससे पशु की त्वचा को कम से कम नुकसान हो और जानवर की मृत्यु के उपरांत उसकी खाल का बेहतर इस्तेमाल भी हो सके। अतः ये निशान ज्यादातर मुंह व गर्दन पर, शरीर के बीच के हिस्से पर, टांग / पुट्ठों पर लगाये जाते हैं। ज्यादातर ऊँट के दो या दो से अधिक पहचान चिन्ह अलग–अलग स्थानों पर लगाया जाता है।

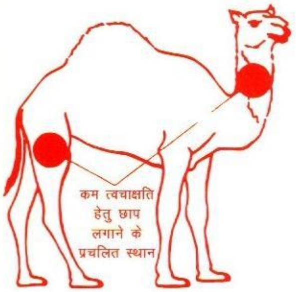

गर्म छाप या निशान लगाने (हॉट ब्रांडिंग) की प्रक्रिया

1. पशु के शरीर पर चिह्नित करने के लिए जिस आकार को इस्तेमाल करना है, उसका लोहे का सांचा बनाया जाता है।
2. हॉट ब्रांडिंग की प्रक्रिया थोड़ी पीड़ा दायक है। अतः सबसे पहले पशु को रस्सी से अच्छी तरह बांध दिया जाता है।
3. पशु शरीर के जिस भाग पर निशान लगाना होता है, उस स्थान के बालों को अच्छी तरह काट कर उसे एंटीसेप्टिक पदार्थ से साफ़ किया जाता है।
4. निशान लगाने के स्थान के आस–पास प्रशिक्षित पशु चिकित्सक की सहायता से लोकल एनेस्थीसिया लगाकर चमड़ी की संवेदना को शून्य कर लेना उचित होता है क्योंकि उससे पशु को दर्द का अहसास कम होता है ।
5. लोहे के सांचे को आग में लाल होने तक गर्म किया जाता है। फिर पशु के शरीर पर चिन्हित स्थान पर सटाकर कुछ देर के लिए रखा जाता है।
6. गर्म लोहे के संपर्क में आने से चमड़ी और कुछ गहराई तक मांसपेशी जल जाती है और पशु के शरीर पर घाव हो जाता है।
7. जलने से बने घाव पर नियमित रूप से मलहम लगाया जाता है ताकि घाव जल्दी भर जाए।
8. घाव भरने के बाद स्कार टिश्यू बनता है जिस पर बाल नहीं आते हैं।

मेरी पहचान

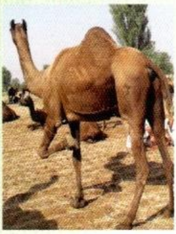

पिछली टांग पर पहचान चिह्न

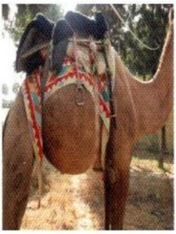

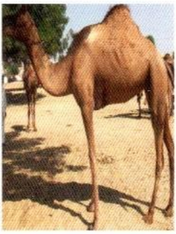

पशु के पुट्ठे पर अंकित किया गया अंक का चिह्न

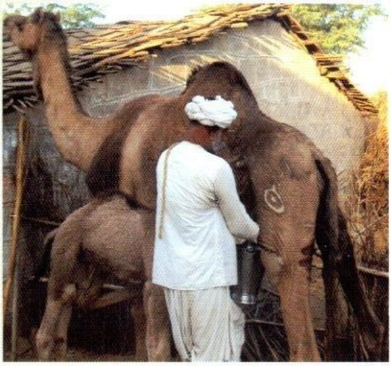

ऊँटनी के बाएँ पुट्ठे पर गोलाकार
मय बिंदु वाला चिह्न

पहचान हेतु ऊँटनी के दायें पुट्ठे पर घण्टी नुमा
चिह्न गांव व उसके साथ एक और चिन्ह

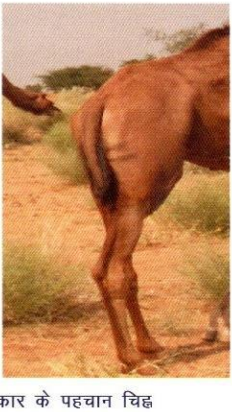

ऊँट की पिछली टांग पर दो प्रकार के पहचान चिह्न

पशु की पिछली टांगों पर
भिन्न–2 पहचान चिह्न

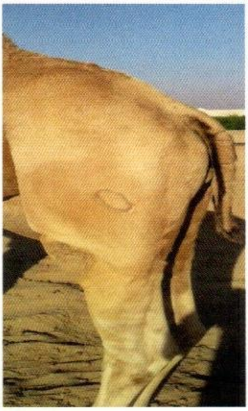

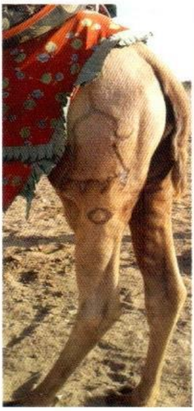

ऊँट की पिछली टांग पर गोलाकार पहचान चिह्न
ऊँट की पिछली टांग के पुट्ठे पर पहचान हेतु घंटी नुमा
व गोलाकार रूप में लगाए गए विशेष चिह्न

पशु के बाएँ टांग के पीछे लकीर
नुमा निशान ताकि उसे पीछे से
पहचाना जा सके

शरीर के विभिन्न स्थानों पर लगाई गई गर्म छाप

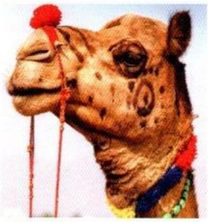

मुंह/जबड़े पर निशान चिह्नित करना

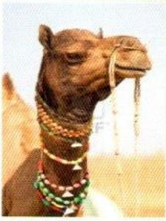

पहचान के लिए गर्दन पर मनके/ मोती की माला, विविध रंग की रस्सी, घंटी, तावीज इत्यादि से दूर से अपने पशु को ढूँढना आसान हो जाता है।

जबड़े के बाएँ तरफ के पिछले भाग पर निशान जिस से पशु को दूर से पहचाना जा सकता है।

मुख के किनारे, गर्दन के ऊपरी किनारे व बीच में चिन्ह

जबड़े के दाएँ तरफ के पिछले भाग पर गोलाकार चिन्ह, इससे पशु दूर से पहचाना जा सकता है।

सिर के पीछे चिन्ह

नासिका के ऊपर चिह्न

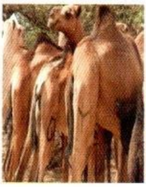

पिछली टांग पर पहचान चिह्न

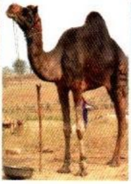

जबड़े, गर्दन एवं पिछली टांग पर पहचान चिह्न

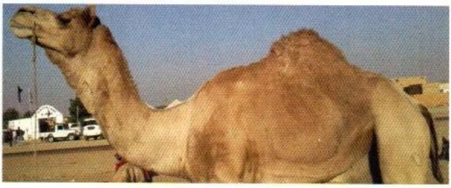

जबड़े एवं पिछली टांग के पुट्ठे पर गोलाकार निशान ताकि पशु को दूर से पहचाना जा सके

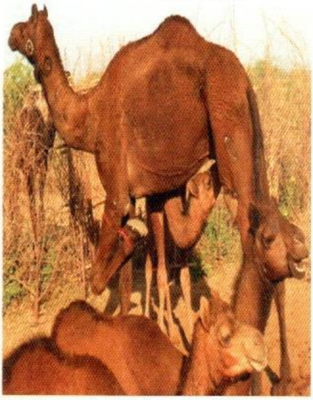

जबड़े एवं पिछली टांग पर निशान चिह्न

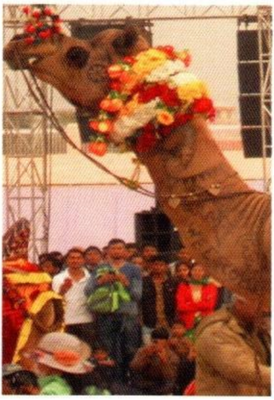

पहचान के लिए पशु के गर्दन पर निशान लगाये जाते हैं, जंगल, चरागाह में पेड़–झाड़ियों को चरते समय इस तरह के निशान अधिक लाभ दायक होते हैं।

कानों में टैग लगाना (ईयर टैगिंग)

1. पशु के कानों में प्लास्टिक या धातु के टैग (पहचान चिन्ह) लगाने की प्रक्रिया को 'ईयर टैगिंग' कहते हैं।
2. इस प्रक्रिया में पशु को अच्छी तरह से बैठाकर बांध लेते हैं और उसके सिर पर पकड़ बनाते हुए कानों पर टैग लगते हैं।
3. ईयर टैग लगाने के लिए स्टेपलर पंच की तरह एक छोटे से उपकरण का प्रयोग किया जाता है।

4. कई प्रकार और रंग के प्लास्टिक के टैग जिन पर अंक या अक्षर खुदे होते हैं, बाजार में आसानी से उपलब्ध है। इनका प्रयोग ऊँटों के अलावा गाय, भैस, भेड़ और बकरियों की पहचान के लिए भी किया जाता है।
5. इसे लगाना काफी आसान होता है। इसे लगाते वक़्त पशु को मामूली–सा दर्द का अहसास होता है और लगाने के बाद खास देखभाल की जरुरत भी नहीं होती है।
6. ईयर टैग गर्म छाप की तुलना में कम टिकाऊ होता है। कभी–कभी झाड़ियो में कान के फँस जाने पर यह कान से अलग भी हो सकता है।
7. ईयर टैग में लगे पहचान के नंबर या अक्षर को पढ़ने के लिए पशु के पास जाना पड़ता है।
8. इस विधि का प्रयोग बीमा कंपनियाँ खूब कर रही है। इसके अलावा पशुपालन विभाग भी ऊँटों से सम्बंधित विभिन्न सरकारी योजनाओं में ऊँटों की पहचान के लिए इस विधि का इस्तेमाल कर रहा है।

ईयर टैग लगाने की प्रक्रिया

ईयर टैग लगे पशु

ठंडी छाप या निशान लगाने की प्रकिया

1. ठंडी छाप लगाने के लिए पशु को गरम छाप लगाने की प्रक्रिया के अनुरूप ही तैयार किया जाता है।
2. इस विधि में लोहे के बने सांचे को आग में गर्म करने के बजाय तरल नाइट्रोजन में डालकर ठंडा किया जाता है। तरल नाइट्रोजन कृत्रिम गर्भाधान के लिए वीर्य संग्रहण के काम भी आता है, अतः यह बाजार में आसानी से उपलब्ध होता है।
3. इसके बाद अच्छी तरह से तैयार किए गए शरीर के हिस्से के ऊपर लोहे के सांचे को दो से तीन मिनट तक सटाकर रखा जाता है। लोहे के बने सांचे को तरल नाइट्रोजन में डालकर ठंडा किया जाता है।
4. इस विधि में चमड़े के ऊपर मामूली सा घाव बनता है जिसकी समुचित देखभाल की जाए तो एक हफ्ते के अन्दर–अन्दर भर जाता है।
5. इस विधि से बना निशान, उस स्थान पर बालों के उड़ने या सफ़ेद हो जाने के कारण स्पष्ट नजर आने लगता है।
6. ठंडी छाप लगाने में पशु को कम दर्द का अहसास होता है। परन्तु ठंडी छाप के निशान गर्म छाप की तुलना में कम स्पष्ट होते हैं। कई बार इन्हें दुबारा बनाने की जरुरत भी हो सकती है।

ठंडी छाप लगाने की प्रक्रिया

ठंडी छाप से एक स्थान पर दो चिन्ह बनाते हुए

ठंडी छाप का निशान

ऊँट के गर्दन पर पहचान चिह्न

पशुओं को चिन्हित करने के लाभ

आज के समय में पशुओं के प्रबंध करने की व्यवस्था में इस प्रणाली का विशेष योगदान है जैसे कि पशु किस व्यक्ति/संस्था/गाँव का है, उसे निशान से पहचाना जा सकता है। नर व मादा में इसे अलग–अलग स्थान पर लगाने से पशुओं को दूर से पहचाना जा सकता है। बीमार पशु को पहचान कर टोले से अलग करने में सुविधा होती है।

ऊँट ग्रामीण परिवेश में चराई पर निर्भर रहता है। इस कारण पशु पालक उसे भी दूर–दूर तक ले जाता है। ऐसे में पशुपालक को दूर से अपने पशु को पहचान करने में सुविधा हो जाती है।

यह देखा गया है कि पहचान के लिए लगाए गए चिन्ह समुदाय/गाँव के पशु पालकों की ओर से एक से पाए जाते हैं। उसके अतिरिक्त कोई छोटी–सी निशानी लगा दी जाती है ताकि उस पशु पालक को अपने पशु ढूंढने में आसानी हो सके। कुछ स्थानों पर कई गावों के पशु चरने के लिए आते है। ऐसे में गाँव/समुदाय के चिह्न से पहचान होना जरुरी है।

पशु बीमा या अन्य सरकारी या सहकारी योजना में पशु के शामिल होने के लिए पहचान चिन्ह लगाना आवश्यक होता है।

कई बार पहचान चिन्हों में पशु पालक की जाति या धर्म आदि की जानकारी भी प्रदर्शित होती है।

आजकल विदेशों में कई जगह मशीन मिल्किंग की तकनीक का इस्तेमाल किया जा रहा है। इनका इस्तेमाल ज्यादातर बड़े–बड़े ऊँट फार्म जिनमें पशुओं की संख्या सौ या हजार तक होती है, में किया जा रहा है। ऐसे आधुनिक फार्मों में पशुओं के पहचान के लिए डिजिटल टैगिंग का प्रयोग भी किया जा रहा है। इसमें चावल के दाने के बराबर का एक डिजिटल चिप चमड़े के अन्दर सुई की सहायता से डाल दिया जाता है, जिसे डिजिटल सेंसर पहचान सकते हैं। इसके प्रयोग से जानवरों के स्वास्थ्य उसके दूध की गुणवत्ता (सोमेटिक सेल काउंट) और कुल दूध उत्पादन पर नजर रखना और उनका व्यवस्थित रिकॉर्ड रखना आसान हो जाता है।

प्रकाशित

निदेशक, भा.कृ.अनु.प.-राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसन्धान केन्द्र, पोस्ट बैग 07, जोड़बीड़ बीकानेर, राजस्थान, दूरभाषः 0151-2230183, फैक्सः 0151-2970 153

ई–मेल : nrccamel@nic.in, **वेबसाईट** : www.nrccamel@icar.gov.in